

अध्याय में सम्पर्कित हैं :

- उद्देश्य
- प्रावक्षयन
- नृजातीय पद्धति के विकास की पूर्व दशाएँ
- नृजीय पद्धति का अभिप्राय
- नृजीय पद्धति के पहलुओं का अध्ययन
- गौरफिन्कल का योगदान
- हरसन तथा शूटज का योगदान
- नृजीय पद्धति की अवधारणाएँ
- नृजीय पद्धति के प्रकार
- नृजीय पद्धति की अध्ययन विधियाँ
- नृजीय पद्धति का महत्व
- अध्याय का संक्षिप्त सार
- परीक्षाप्रयोगी प्रश्न

उद्देश्य— इस अध्याय अध्ययन के पश्चात आप निम्न तथ्यों को समझ सकेंगे।

- नृजातीय पद्धति के विकास की पूर्व दशाएँ
- नृजीय पद्धति का अभिप्राय
- नृजीय पद्धति के पहलुओं का अध्ययन
- गौरफिन्कल का योगदान
- हरसन तथा शूटज का योगदान
- नृजीय पद्धति की अवधारणाएँ
- नृजीय पद्धति के प्रकार
- नृजीय पद्धति की अध्ययन विधियाँ
- नृजीय पद्धति का महत्व

NOTES

प्रावक्षण

समाजशास्त्र में सत्य की खोज या प्रघटना के अध्ययन के अन्तर्गत नृजातीय पद्धति शास्त्रीय उपागम को एक नवीन विकास माना गया है जिसने परम्परागत विचारधाराओं को चुनौती दी है।

संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक उपागम की अपनी अन्तर्निहित सीमाएं होने के कारण इस पद्धति के पढ़ने सामाजिक यथार्थ को प्रत्यक्ष और निकटता से अध्ययन करने हेतु ऐसी उपागम की आवश्यकता अनुभूत हुई जिनके द्वारा सामाजिक यथार्थ और सामाजिक प्रघटनाओं की उन आधारित पहलुओं को अनावरित किया जाता है¹ मुख्य रूप से नृजातीय पद्धति शास्त्रीय उपागम मानवीय व्यवहार के उन पक्षों के अध्ययन करने पर बल देती है जो कि व्यक्ति के जीवन में दैनिक वे व्यावहारिक क्रियाओं से सम्बन्धित हैं।

नृजातीय पद्धति के पक्षधर समाजिक अन्तर्क्रिया के माध्यम से जिस सामाजिक यथार्थ का निर्माण होता है, उसके अध्ययन पर बल देती है। परम्परावादी समाजशास्त्रीय सामाजिक यथार्थ को प्रदत्त मानते हैं जिसके अन्तर्गत सामाजिक संरचना का स्थिर दृष्टिकोण प्रमुख रूप से उभरता है जबकि नृजातीय पद्धति शास्त्रीय उपागम के प्रवर्तक सामाजिक संरचना को गत्यात्मक व परिवर्तनशील प्रघटना मानते हैं। कर्ता अपनी अन्तः क्रियाओं के माध्यम से सामाजिक प्रघटनाओं सामाजिक स्थितियों को एक विशेष अर्थ प्रदान करता है। जिससे कि सामाजिक संरचना को परिवर्तनशील माना जाता है। नृजातीय पद्धति समझ पर अधिक बल देती है।

11.2 नृजातीय पद्धति के विकास की पूर्वदशायें

समाजशास्त्रीय गिसले डेविस ने माना है कि केवल संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम समाजशास्त्र का यथार्थ माना जा सकता है। इस उपागम के मध्यम से होने वाले सभी अध्ययन कार्य यथास्थिति को औचित्यता प्रदान करते हैं। स्वभाविक रूप से ऐसा समाजशास्त्र परम्परागत समाजशास्त्र कहा जाने लगा इस प्रकार समाज शास्त्र के अन्तर्गत होने वाले अध्ययन एवं अनुसंधन व्यवस्थावादी हो गये जिससे नितान्त स्वाच्छों को अपनी निरन्तरता बनाये रखने का बौद्धिक आधार प्राप्त हुआ परन्तु इन सबके बावजूद भी समाजशास्त्र के अन्दर दृवन्द चल रहा था। समाजशास्त्रियों की सामान्य प्रतीत थी कि समाज, सामाजिक संस्थाओं सामाजिक व्यवहार तथा सामाजिक जीवन के बारे में सत्यता व वास्तविकता का प्रकटीकरण नहीं हो रहा था और न ही समीक्षीय समाज निर्माण में समाजशास्त्रियों के योगदान का कोई महत्व दृष्टिगोचर हो रहा था। ऐसा लग रहा था कि नवीन व भारी भरकम शब्द जाल एवं सम्बन्धों की संरचना के अतिरिक्त सत्य के नवीन उपागम नहीं उभरे हैं। अनेक नवीन समाजशास्त्री इस बात से असंतुष्ट थे कि वैज्ञानिक पद्धतियों आँकड़ों के द्वारा कम्प्यूटरों के उपयोग तथा व्यापक हानिशिक्षा के खर्च करने पर समाजशास्त्र को अधिक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से समझने में सफल नहीं हो रहा है।

धीरे-धीरे आवाज उठने लगी कि प्राकृतिक विज्ञान और मानवीय विज्ञान एक ही धरातल पर नहीं रखे जा सकते। मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन वस्तुओं की तरह करना कठिन है व उचित भी प्रतीत नहीं होने लगा। तारागण की कोई भावनाएँ नहीं होती न ही पेढ़ पौधों को कोई चिन्ता होती है। लेकिन इससे भिन्न समाजशास्त्री का अपनी विषय वस्तु के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध होता है। प्रारम्भ से ही वह अपनी अध्ययन सामग्री में दृबा रहता है। वह सदैव अपने अध्ययन प्रतिक्रियाओं का सहभागी पर्यवेक्षक होता है। उसके अध्ययन व अवलोकन सभी एक विशेष समाज एक विशेष समय वे स्थान की उपज होते

NOTES

है। वह स्वयं समाज की उपज हाता है जो कि समाजीकरण की उस प्रक्रिया से गुजरता है जिसमें की समाज के अन्य सदस्य सम्मिलित होते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान वह समाज के मूल्यों मानदण्डों और विश्वासों का आनंदीकरण करता है। पारसन्स कहते हैं कि ऐसा करने में वह मूल्यव्युक्त या मूल्य भारित नहीं रह सकता। किन्तु वास्तव में देखा जाए तो मानवीय मूल्य वस्तुओं की तरह नहीं हो सकते। मकान जैसा है वैस ही रहेगा। किसान का स्वभाव एकदम नहीं बदल जाता परन्तु मानवीय सम्बन्ध इतने सुगम नहीं होते। मानवीय प्रकृति एवं स्वभाव इतने विचित्र होते हैं कि उनके मान वचन औंश कम में समन्वय नहीं होता। कभी-कभी व्यक्ति सोचता कुछ और कहता कुछ अन्य है। अतः ऐसे व्यवहार को विज्ञान की कुछ विचित्र श्रेणियों में बांधना असम्भव नहीं होता तो कठिन अवश्य है।

कुछ पेड़ पौधों का अध्ययन तो प्रयोगशाला से संभव है किन्तु क्या किसी साम्प्रदायिक दंगे का अध्ययन करते समय किन्हीं दो विभिन्न साम्प्रदायों के सदस्यों को प्रयोगशाला में लड़वाया जा सकता है।

11.3 नृजाति पद्धति का अभिप्राय

नृजाति पद्धति को अंग्रेजी में (Ethnomethodology) कहते हैं। जो दो शब्दों से मिलकर बना है। प्रथम शब्द एथ्नो (Ethno) का अर्थ है, व्यक्ति सामान्य ज्ञान (People's commonsens) तथा दसूरा शब्द मैथोडोलॉजी (Methodonodology) से अभिप्राय है अध्ययन करने की पद्धति से है। दोनों शब्दों का सम्मिलित अर्थ व्यक्तियों के अध्ययन करने की पद्धतियों का प्रयोग करना।

जिन विचारकों ने इस सम्प्रदाय को समाजशास्त्र के क्षेत्र में आधार प्रदान किया उनमें गारफिन्कल, एल्विन गॉल्डनर, पीटर बर्जर, डिविट बिन्स, बनार्ड फिलिप्स प्रमुख हैं। जिन्होंने नृजाति पद्धति शास्त्रीय की नींव डाली।

नृजाति पद्धति की आधारशिला रखने वाले समाजशास्त्रियों में गारफिन्कल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने नृजाति पद्धति में प्रमुख दो विचार शामिल किये हैं। 1. समस्याओं को सुलझाने के लोगों के अपनी तरीके होते हैं तथा वे इन तरीकों को विज्ञान के तरीकों से तुलना करते हैं। 2. एथ्नों में लोक विचार हाता है अर्थात् इससे विष्व साधारण या प्रतिदिन की अन्तः क्रियाओं पर होता है। मुख्य अध्ययन इस बात पर केन्द्रित किया जाता है कि लोग अपने अनुभवों पर किस प्रकार स्पष्टीकरण देते हैं तथा अपनी समस्या को सुलझाने के लिए वे क्या प्रयास करते हैं।

गारफिन्कल ने माना है कि एथ्नो उन लोक ज्ञान पद्धतियों का संग्रह करने का प्रयास करेगी। जिसके द्वारा मनुष्य के विचारों के क्रम को निर्धारित किया जाता है। इस पद्धति का अवलोकन मनुष्य की ऐनिक जीवन की गतिविधियों में, किया जाता है।

एल्विन गॉल्डनर के अनुसार इस उपागम में चेतावनी इसलिए नहीं दी जाती क्योंकि सामाजिक प्रधटना का वर्णन और व्याख्या एक अवलोकन कर्ता के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है।

पीटर बर्जर ने अपनी पुस्तक (Invitation to Sociology) में बताया है कि वस्तुयें जैसे प्रतीत होती हैं, वैसी नहीं अर्थात् वस्तु के बारे में वास्तविकता की जानकारी उसके आवरण को हटाकर ही की जा सकती है। उनकी मान्यता है कि सामाजिक यथार्थ संरचित व पुन संरचित होता है। उनकी मान्यता है कि सामाजिक।

बनार्ड फिलिप्स ने अपनी कृति (Sociology for concept to practice) में इथ्नो पद्धति की सैद्धान्तिक अधिनति है। जिसका उद्देश्य यह वर्णन करना है कि लोग दिन-प्रतिदिन की अन्तः-

NOTES

क्रिया में किस प्रकार परिस्थिति की परिभाषा रखते हैं और वास्तविकता को ढालते हैं और बताया है कि ये समस्या सुलझाने के विषय में सामान्य बुद्धि के सिद्धान्त हैं अथवा लोक सिद्धान्त हैं। एथनो पद्धति वादियों के लिए सामाजिक संरचनायें यथावत् स्वीकार्य नहीं होती।

डिविड बिन्स ने अपनी पुस्तक में एथनो पद्धतिवादी उपागम का विश्लेषण करते हुए बताया है कि अर्वाचीन समाजशास्त्र में प्रघटना उपागम की सर्वाधिक अतिवादी की महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में नृजाति पद्धति उभर कर आई। नृजाति पद्धति शास्त्र की धारणा है कि यह एक ऐसी पद्धति है जिसको विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त किया गया है।

11.4 नृजाति पद्धति के पहलुओं का अध्ययन

जर्मनी के. ए. मारक्यूस ने अपनी पुस्तक में परम्परा गत समाजशास्त्र का विरोध किया एवं नये समाजशास्त्र की स्थापना की इन्होंने परिचयी एवं आधुनिक औद्योगिक समाज की आलोचना की। क्योंकि उनका अध्ययन व विश्लेषण वैज्ञानिक उपागमों प्रत्यक्षबाद के बोझ से भारित होकर स्थिति को बनोय रखने की दृष्टि को ध्यान में रखकर किया गया था। परिणामस्वरूप नवीन एवं संशोधित उपगम के रूप में नृजाति पद्धति उभर कर आई।

नृजाति पद्धति के अन्तर्गत तीन पहलुओं पर बल दिया जाता है-

1. दिन-प्रतिदिन की सामान्य क्रियाये नृजाति पद्धति के सिद्धान्त को मानने वाले सामाजिक अन्तः क्रिया के माध्यम से जिस सामाजिक यथार्थ का निर्माण होता है, उसके अध्ययन पर बल देते हैं। परम्परावादी समाजशास्त्र सामाजिक यथार्थ को प्रदत मानते हैं जिसके अन्तर्गत सामाजिक संरचना का स्थिर दृष्टिकोण प्रमुख रूप से उभरता है। जबकि नृजाति पद्धति के प्रवर्तक सामाजिक संरचना को गयात्रक व परिवर्तनशील प्रघटना मानते हैं, जिनमें लघु घटनाओं जिनसे हम मानव होने के नाते सम्बन्धित हैं का भी अध्ययन सामाजिक अन्तःक्रिया व समाजशास्त्र की महत्ता की दृष्टि से करना जरूरी है।

गारफिन्कल दैनिक के संसार का अध्ययन करना चाहते हैं। उनकी धारणा थी कि तुम अपने चारों और देखो और प्रत्येक जगह तुम पाओगे कि सामान्य व्यक्ति अपने दैनिक के क्रिया-कलापों को जाने पहचाने द्वंग से निर्वहित करते हैं।

2. भाषा का सामाजिक पक्ष समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से भाषा का अर्थ महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आविष्कार हैं जो मानव अविकृत है। अतः इसका ज्ञान होना जरूरी है क्योंकि भाषा के माध्यम से हम विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं जो कि हमें अनौपचारिक क्रम में चांधता है। शब्दों के केवल वे ही अर्थ नहीं होते जो शब्दकोष में पाये जाते हैं या उन शब्दों का ग्रामर की दृष्टिकोण से जो अर्थ निकालते हैं वे ही सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी सर्वमान्य हो यह आवश्यक नहीं। वैसे भाषा का अर्थ भाषाशास्त्र से है जो यह बताता है कि वाक्य का शास्त्रिक अर्थ क्या है? किन्तु समाज में यह समुदाय में जब भाषा को प्रयुक्त किया जाता है तो उसका अर्थ ग्रामर या शब्दकोष पर आधारित न होकर भिन्न होता है।

भाषा के अतिरिक्त प्रतीकात्मक अन्तः क्रिया मूक भाविकायें हावभाव, मौन गतिविधियाँ संकेत इशारे आदि द्वारा भी पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति के चेहरे पर कैसे भाव हैं। हास्यात्मक, क्रोधात्मक या सामान्य भाव हैं।

NOTES

3. सामाजिक प्रतिमानों का वह पक्ष जो कि कर्ता अपने व्यवहार में उपयोग करता है, किसी भी संरचना में प्रतिमानित प्रारूप द्वारा जिस प्रकार की यथार्थता का अवलोकन किया जाता है वह स्थिर होगी और उसका परिणाम पूर्व निर्धारित होता है क्योंकि पूर्व मान्यताएँ किसी भी सामाजिक क्रिया के परिणामों को निर्धारित करते हैं। अतः पूर्व मान्यताओं एवं रूढ़िगत विचारों से हटकर यथार्थ में निर्वहति व्यवहार को जानने का प्रयास करना होगा। स्थिर प्रतिमानित व्यवस्था से यथार्थ को जानने का प्रयास करना सही नहीं होगा क्योंकि स्थिर प्रतिमानित व्यवस्था से यथार्थ को समझा जानासामाजिक प्रधाना के सभी पक्षों को सही अथवा प्रदान नहीं करता। इसलिए नृजाति पद्धति यथार्थ को जानने के लिये इस बात पर महत्व देती है कि किसी भी संरचना में व्यक्तिगत विभिन्नता कापता लगाया जावें। व्यक्तिगत विभिन्नता से एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक यथार्थ का सूजन होता है।

जैसे कक्षा की संरचना को केवल होशियार व कमज़ोर विद्यार्थियों के प्रभाव के आधार पर नहीं समझना चाहिये अपितु कक्षा की संरचना में व्यक्तिगत छात्र का प्रभाव कैसा है? वे अपने व्यक्तिगत स्तर पर अनुशासन सम्बन्धी नियमों की अनुपालना में प्रतिमानों का प्रयोग कैसे करते हैं? इन सबकी व्यक्तिगत जानकारी आवश्यक है।

11.5 गारफिन्कल का योगदान

गारफिन्कल समाजशास्त्रियों में प्रमुख समाजशास्त्री है जिन्होंने नृजाति पद्धति का विस्तार से वर्णन किया। एथनो शब्द की उत्पत्ति के बारे में गारफिन्कल ने स्वयं अपनी कृति Studies in Ethnomethodology 1967 में इसका उल्लेख किया।

एक बार स्ट्रोड बैंक के सुझाव पर 1945 में गारफिन्कल सोल मैडस स्विज विजिटा में जूरी के प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहे थे जब नृजाति शब्द का प्रयोग प्रथम बार उसके मरितष्क में आया। इसके अन्तर में गारफिन्कल ने स्पष्ट किया कि नृजाति उन लोक ज्ञान पद्धतियों का संग्रह करने का प्रयास करेगी जिसके द्वारा मनुष्य के विचारों के क्रम को निर्धारित किया जा सके।

मानवशास्त्रीय सम्प्रदाय के प्रमुख विचारकों गारफिन्कल की यह मान्यता की कि मानवशास्त्रीय पद्धति के द्वारा समाजशास्त्र की हम अनेक आधारभूत अवधारणाओं का पुनः निर्माण करसकते हैं। उन्होंने के शब्दों में मानवशास्त्रीय पद्धति के दृवारा सामाजिक प्रधानाओं के अध्ययन का दृष्टिकोण इस तथ्य पर बल देता है कि एक समाजशास्त्री को यह अध्ययन करना चाहिए कि व्यवहारिक तथा दिन-प्रतिदिन की दशाएँ किस प्रकार सामाजिक रूप में संगठित होती हैं इस रूप में वह कैसी दिख पड़ती है? कैसे उनकी जानकारी प्राप्त होती है और किस प्रकार व्यक्ति एक सामान्य क्रम में उन्हें देखते हैं? जिस प्रकार समाज के दूसरे व्यक्ति भी उन्हें उसी प्रकार देखते हैं।

गारफिन्कल ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य ने सामाजिक संसार को एकता के ताने बाने में बुना है उसका कारण कोई पवित्र नैतिकता नहीं बल्कि इस प्रकार की समाज की एकता पारस्परिक भागीदारी और समाज की सामूहिक चेतना पर निर्भर करती है। इनकी धारणा है कि संसार या समाज का संगठित रूप इसलिये संभव है, कि लोग स्वाभाविक रूपसे इसको समझ सके। वे इस प्रकार से व्यवाहर करते हैं कि जिससे समाज का संगठन बना रहता है।

गारफिन्कल ने मनुष्य के दैनिक जीवन और दैनिक गतिविधियों को अध्ययन का केन्द्र बिन्दु माना है। उनका यह भी विश्वास है कि हमें अपने आपको सामान्य सूझ-बूझ के संसार से जोड़ना चाहिये।

NOTES

सामान्य अर्थ निरूपित संसार द्वारा गारफिनकल ने टालकट पारसन्स या गैफमैन की तरह कोई बड़ी-बड़ी अवधारणायें तथा अमूर्त सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं किया लेकिन सामान्य बुद्धि के आधार पर यह कहा है कि हमारा समाज व संसार हमारी सामान्य बूझ पर निर्भर करता है। सामान्य रूप से भीतरी छिपे व्यवहार के दो नियम हैं। एक तो यह है कि मनुष्य के अस्तित्व का प्रत्यक्ष रूप से पता लगाया जायें। इसका नियम यह है कि सामाजिक व्यवहार के नियम सूझ-बूझ के आधार पर बनाये जाये।

गारफिनकल ने आगे कहा है कि प्रत्येक क्रिया जो कि व्यक्ति द्वारा घटित होती है या समाज में घटित होती है महत्वपूर्ण है। दिन प्रतिदिन घटने वाली घटनाओं द्वारा हमारा जीवन अधिक प्रभावित होता है अतः हमको ऐसी घटनायें तुच्छ और अत्यमहत्व की समझकर छोड़ नहीं देनी चाहिये बल्कि उनका अध्ययन व विश्लेषण द्वारा अर्थ निरूपण करके सामाजिक यथार्थ का पता लगाना चाहिए। गारफिनकल ने आगे लिखा है कि यह नारा बन चुका है कि व्यवहारिक गतिविधियाँ को समझने के लिये सामान्य ज्ञान का महत्व बढ़ता जा रहा है मनुष्य का जो संगठित अनुभव है जो ज्ञान मनुष्य को दैनिक जीवन के अस्तित्व से प्राप्त होता है उसका विश्लेषण सामान्य ज्ञान के आधार पर किया जाना आवश्यक है।

गारफिनकल मानव शास्त्र में कुछ विषयवस्तु का अध्ययन कर रहे थे जिसमें गैर पाश्चात्य जनजातियों द्वारा वैज्ञानिक सिद्धान्तों से भिन्न स्वदेशी सिद्धांत विकसित करने का वर्णन था। यह सिद्धांत स्वास्थ्य पौधों एवं भौतिक ब्रह्माण्ड के विषय में थे। इन लोक सिद्धान्तों का इथनोमेडिसिन इथनो बौटनी फिजिक्स इथनोएस्ट्रोनो भी आदि के रूप में नामांकित किया गया।

इस प्रकार गारफिनकल ने जो दृश्टिकोण प्रस्तुत किया है उसमें उनकी रूचि उन पद्धतियों को विकसित करने की रही है जिसके द्वारा सामान्य ज्ञान पर आधारित सामाजिक प्रश्नाओं में समरूपता लाई जा सके।

गारफिनकल के लोक विधि उपागम सम्बन्धी प्रमुख विचारों को निम्न प्रकार स्पष्ट किया है।

1. अध्ययन का केन्द्रीय विषय (थीम) गारफिनकल के अध्ययन का केन्द्रीय मुद्दा यह है कि लोक स्वीकृत धारणाओं के अनुसार अपने व्यवहार का अनुकूलन क्यों और कैसे करते हैं।
2. नवनी सैद्धान्तिक संदर्भ नृजाति पद्धति केवल एक नयी विधि मात्र नहीं हैं बल्कि यह एक वह सैद्धान्तिक संदर्भ है जो परम्परागत समाजशास्त्रीय अध्ययन की समस्याओं से अकर है।
3. सामाजिक तथ्य की तलाना में लोगों द्वारा अपनायी गयी विधियों का अधिक महत्व गारफिनकल का कहना है कि सामाजिक तथ्य अपने आप में कुछ नहीं हैं। उनका निर्माण और अस्तित्व तो व्यक्ति की दैनिक गतिविधियों पर निर्भर है।
4. समाज की तुलना में व्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण : नृजाति पद्धति प्रकार्यवादियों के विपरीत यह मानकार चलते हैं कि समाज में जो कुछ है वह समाज में नहीं बनाया है। उसे बनाने का श्रेय उन व्यक्तियों का अनुभव है जो समाज में रहते हैं।
5. नृजाति पद्धति का उद्देश्य गारफिनकल का मत है कि नृजाति पद्धति का उद्देश्य उस प्रक्रिया की पहचान करना है जिसके माध्यम से लोग समाज के नियम उननियम को स्वीकृत समझकर चलते हैं।

11.6 हरसन एवं सूटज का योगदान

हसरल एवं लूटज ने समाजशास्त्र में नृजाति पद्धति में अनन्विक अन्तःक्रियाओं की बात की है और कहते हैं कि वर्तमान में हमें अध्ययन में प्रतिमानात्मक प्रारूप आदर्श प्रारूप को महत्व नहीं देना चाहिए। सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन के बाबजूद भी इन सामाजिक प्रघटनाओं का उन्हीं पुरानी पद्धतियों से अर्थ निकालना अनुचित होगा। उसके स्थान पर निर्वहन प्रारूप को महत्व देना चाहिए। हम किसी घटना को क्या अर्थ दे रहे हैं उनका कहना है कि समाज शास्त्री को वही अर्थ निकालना चाहिए, जो कि किसी घटना को समझने हेतु कर्ता दे रहा है। सूटज का विश्वास है कि यथार्थ दो स्वरूपों भौतिक यथार्थ व सामाजिक यथार्थ से मिलता है। प्राकृतिक विज्ञानों से भिन्न सामाजिक विज्ञान में विशेष रूप से समाजशास्त्र में, सामाजिक यथार्थ का निर्माण व पुनः निर्माण होता है। नृजाति पद्धति की उत्पत्ति दर्शनशास्त्र से हुई है। जिसके द्वारा घटनाओं को उनके वास्तविक स्वरूप में जानने के लिए हम पूर्व में दर्शन शास्त्र के महत्व को नगण्य मानते थे। वर्तमान में इसका खण्डन हो गया और कहा गया कि दर्शन के महत्व को भी स्वीकारा जाना जरूरी है। वर्तमान में ऐसी धारणा बन गई कि दार्शनिक प्रकृति समाज को समझा जाना गलत या असंगत नहीं है।

11.7 नृजाति पद्धति की अवधारणायें

समाजशास्त्र में नृजाति पद्धति की पौच महत्वपूर्ण अवधारणाओं का उल्लेख किया है। जिन्हें इस उपागम के महत्वपूर्ण यंत्र के रूप में प्रयोग करके नृजाति पद्धति शास्त्र सामाजिक यथार्थ को समझने का प्रयास करते हैं। नृजाति पद्धति में कोई घटना क्या है इस रूप में नहीं समझी जाती है। बल्कि व्यक्ति द्वारा दिये गये अर्थ के संदर्भ में उसको समझना होता है। कुछ विद्वानों ने यह प्रश्न उठाया कि वास्तविक निर्वाहित पक्ष को जानने हेतु किस प्रकार की अवधारणाओं का प्रयोग किया जावें?

गारफिन्कल ने पौच प्रमुख अवधारणाओं की चर्चा अपनी पुस्तक में की है जो निम्न है। क्रमबद्ध वर्गीकरण बार हिलेर ने सर्वप्रथम भाषा के इस क्रमबद्ध वर्गीकरण को विस्तार से समझने का प्रयास किया। अतः भाषा का अर्थ जैसा कि हसरल ने कहा हम तब तक नहीं समझ सकते जब तक कि हम उस स्थिति, वाक्यों के उपयोग करने वालों के जीवन संवाद के पूर्व संदर्भ को ठीक से नहीं समझ लेते हैं। इसलिये कहा जाता है कि तब तक बातचीत करने वाले लोगों की पृष्ठभूमि का हमें ठीक से पता न हो तब तक हम पूरे संवाद के वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सकते हैं अतः शब्दों के अर्थ संदर्भ द्वारा बंधे होते हैं। गारफिन्कल ने क्रमबद्ध वर्गीकरण में भाषा सम्बन्धी व्यवहारिक संदर्भ जीवन चरित्र पूर्वकृत बातों का उल्लेख किया है। क्रमबद्ध वर्गीकरण द्वारा किसी भी घटना की संदर्भ में चर्चा की जाती है नृजाति पद्धति में क्रिया का संदर्भ समझना जरूरी है।

1. क्रमबद्ध वर्गीकरण बार हिलेर ने सर्वप्रथम भाषा के इस क्रमबद्ध वर्गीकरण को विस्तार से समझने का प्रयास किया। अतः भाषा का अर्थ जैसा कि हसरल ने कहा हम तब तक नहीं समझ सकते जब तक कि हम उस स्थिति, वाक्यों के उपयोग करने वालों के जीवन संवाद के पूर्व संदर्भ को ठीक से नहीं समझ लेते हैं। इसलिये कहा जाता है कि तब तक बातचीत करने वाले लोगों की पृष्ठभूमि का हमें ठीक से पता न हो तब तक हम पूरे संवाद के वास्तविक अर्थ को नहीं समझ सकते हैं अतः शब्दों के अर्थ संदर्भ द्वारा बंधे होते हैं। गारफिन्कल ने क्रमबद्ध वर्गीकरण में भाषा सम्बन्धी व्यवहारिक संदर्भ जीवन चरित्र पूर्वकृत बातों का उल्लेख किया है। क्रमबद्ध वर्गीकरण द्वारा किसी भी घटना की संदर्भ में चर्चा की जाती है नृजाति पद्धति में क्रिया का संदर्भ समझना जरूरी है।
2. व्यवहारिक तर्क संगतता गारफिन्कल ने अपनी कृति नृजाति पद्धति के प्रथम अध्याय में यह स्पष्ट उल्लेखित किया है कि प्रत्येक व्यक्ति समाजशास्त्री है व्यक्तिकै केवल समाजशास्त्री ही

NOTES

NOTES

घटनाओं को अर्थ प्रदान नहीं करते बल्कि जो व्यक्ति समाजशास्त्री नहीं है वह भी सामाजिक घटनाओं को महत्व देता है, अर्थ प्रदान करता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को परिस्थिति में सामंजस्य बनाने के लिए घटनाओं का अध्ययन व्यवहारिक ज्ञान के आधार पर करते हैं। उन घटनाओं को अर्थ निकालकर परिस्थितियों से समायोजित करते हैं। अतः ऐसा मानते हुए हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और जन सामान्य व्यक्ति द्वारा घटनाओं को प्रदत्त अर्थ को अर्थहीन न माना जायें।

- व्यवहारिक शब्दावली व्यावहारिक शब्दावली को अर्थ प्रदान करने का अभ्यास इस शब्द संज्ञा का विकास शब्दावली (ग्लोसरी) से हुआ है। जिसका अभिप्राय है शब्दों के अर्थ का संग्रह। किसी व्यक्तिगत शब्द की किसी व्यक्ति ने अपनी व्यक्तिगत सूझ या दृष्टि से क्यों विवेचना की है। उसे उस व्यक्ति द्वारा उस शब्द संदर्भ में ग्लोसरी कही जायेगी अर्थात् ऐसे शब्दों का उपयोग जिनका अर्थ शाब्दिक अर्थ से जुड़ा नहीं है किन्तु उस वाक्य को अर्थ देने हेतु उसके अभूत अर्थ का सार निरूपण करना होता है। सारा निरूपित शब्द दैनिक वार्तालाप में की गई ऐसी सामान्य बातें हैं जिनका कोई स्पष्ट व सीधा अर्थ नहीं होता किन्तु उनका अर्थ निकाला जाता है। इन संक्षेपित शब्दों से अभिप्राय शब्दों को लघु रूप या गौण अर्थ है।

गारफिन्कल का कहना है कि हम दैनिक जीवन में ऐसे अनेक शब्द समूहों से बने वाक्यों का प्रयोग करते हैं जिसका कोई विशिष्ट अर्थ सीधा इंगित नहीं होता लेकिन उसका अर्थ उस शब्द में छिपा रहता है ऐसे शब्दों को जो कि सामाजिक संचार से पारस्परिक अन्तःक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

- पुनर्चिन्तन पुर्न चिन्तन घटना की परिस्थितियों का मात्र इकाई अनुलेख या प्रलेखन जरूरी नहीं है अपितु घटनाओं की स्थितियों व परिस्थितियों के बारे में चिन्तन मनन व पुनर्विचार करना जरूरी है जिसमें उस घटना के बारे में ऐसी अनेकों जानकारी व ज्ञान मिलता है जिसकी जानकारी प्रारम्भिक स्तर पर नहीं होती। इस ज्ञान के माध्यम से यथार्थ को निकटता से जाना जा सकता है। पुनर्चिन्तन से अभिप्राय है घटना से सम्बन्धित अनावश्यक बातों को चिन्तन द्वारा पृथक करे काम की बात पर पुनर्विचार करना। चिन्तन व मनन द्वारा आलोचना की क्षमता का विकास होता है व नये विचारों का सृजन पुर्न चिन्तन से ही संभव है। परम्परागत समाजशास्त्री पुनर्चिन्तन को अध्ययन पद्धति से सम्बन्धित न मानकर इसको महत्व प्रदान नहीं करते। लेकिन नृजाती तपदधति शास्त्र का कहता है कि जो कुछ भी हम देखते करते या सुनते हैं उस पर मस्तिष्क की प्रतिक्रिया होनी चाहिए। जो कि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है।

गोल्डनर ने अपनी एक पूरी की पूरी कृति पुन चिन्तन पर लिखते हुए उसमें सामाजिक प्रघटनाओं पर चिन्तन के प्रभावों को प्रकाशित किया है। उसमें बताया है कि सामाजिक यथार्थ पुर्न चिन्तन की अवधारणा द्वारा पुर्न निर्मित किये जाते हैं।

- क्रमिक समायोजन नृजारति पद्धति के अन्तर्गत अन्तिम अवधारणा के रूप में सामाजिक घटना को वैज्ञानिक ज्ञान द्वारा निश्चित क्रम प्रदान किया जाता है जिससे कि उस घटना को समझा जा सके।

पीटर बर्जर ने बताया कि सामाजिक संसार का निर्माण अर्थ निरूपित करके किया जाता है। वह अर्थ जो कि हम शब्दों के माध्यम से किसी सामाजिक प्रघटना को देते हैं इसी प्रकार वस्तुओं को भी हमारे

द्वारा अर्थ दिया जाता है नृजाति पद्धति शास्त्र की धारणा है कि जब तक किसी घटना का वैज्ञानिक तरीके से क्रमबद्ध वर्णन और विश्लेषण नहीं किया जाता सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट रूप से जाना जा असम्भव है इसलिए घटना का क्रमबद्ध समायोजन करना चाहिए।

समकालीन समाजशास्त्रीय
सिद्धान्त

11.8 नृजाति पद्धति के प्रकार

समाजशास्त्री डगलस ने अपनी कृति में दो प्रकार की नृजाति पद्धति की चर्चा की है।

1. पारिस्थितिक सम्बन्धी पारिस्थितिक सम्बन्धी जिसका आशय परिस्थितिक से होता है अर्थात् किसी घटना को पारिस्थितिक संदर्भ में अर्थ दिया जाता है और इसमें भी कर्ता का यह प्रयास रहता है कि वह स्वयं इस परिस्थिति को क्या अर्थ और महत्व दे रहा है। इस शाखा के अन्तर्गत अर्थ निरूपण में परिस्थिति को केन्द्र माना गया है विद्वानों की धारणा है कि सामाजिक प्रघटना को अर्थ परिस्थिति बन्धित होते हैं इसलिए एक ही शब्द संज्ञा का विभिन्न परिस्थिति में विभिन्न अर्थ हो जाता है।
2. भाषा सम्बन्धी भाषा जिसका प्रयोग किसी भी घटना को बताने में संचार या वार्तालाप आदि के रूप में किया जाता है का अपना महत्व है। सामाजिक घटनाओं की व्याख्या भी भाषा के माध्यम से सिसोरल व सैक्स ने तथा बार हिलैरी ने सामाजिक भाषा शास्त्रीय पक्ष पर बल दिया है जिसे इस शास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है इन विद्वानों के मतानुसार भाषा के द्वारा किसी भी सामाजिक प्रघटना को मन चाहा स्वरूप दिया जा सकता है। किन्तु नृजाति पद्धति के अन्तर्गत हम भाषा के संदर्भ में ही समझ सकते हैं एक ही प्रकार के वाक्य के अन्तर्गत हम भाषा के संदर्भ में ही समझ सकते हैं। एक ही प्रकार के वाक्य अलग-अलग स्थितियों में अलग-अलग अर्थ रखते हैं। शब्दों के अर्थ संदर्भ द्वारा बंधे हुये होते हैं। अतः भाव की अभिव्यक्तियों का भी अध्ययन महत्वपूर्ण हो विटिगटन भाषा जो प्रयोग में लाते हैं वही भाषा में अर्थात् जिसके माध्यम से संचार संभव हो सके।

NOTES

11.9 नृजाति पद्धति की अध्ययन विधियाँ

नृजाति पद्धति में उन पद्धतियों का चयन किया जाता है जो सत्यता के अत्यधिक निकट हो अर्थात् उपागम द्वारा हम जो भी प्रकट करना चाहते हैं वह सामान्य से कुछ अलग या विशिष्ट होना चाहिए इसलिये यह आवश्यक है कि इसकी अध्ययन पद्धतियाँ अप्रत्यक्ष पद्धतियों से भिन्न होंगी नृजाति पद्धति की प्रमुखता तीन अध्ययन पद्धतियाँ हैं।

1. प्रायोगिक पद्धतियाँ इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि हम किसी भी प्राकृतिक व्यवस्था में कफ़ल परिवर्तन करते हैं या प्राकृतिक व्यवस्था को अनुव्यस्थित करते हैं तो उसके क्या प्रभाव होंगे ?

इसके अन्तर्गत गारफिन्कल ने कुछ प्रयोग किये और उसमें कहा गया कि अपने स्वयं के घर में मेहमान तुल्य व्यवहार कीजिए अर्थात् प्राकृतिक व्यवस्था को असनुलित करके उसकी प्रतिक्रियाओं व परिणामों का अध्ययन कीजिये क्योंकि इस प्रकार का व्यवहार निश्चित रूप से पारिवारिक सदस्यों की प्रतिक्रिया के विषय होगा। विभिन्न प्रयोगों द्वारा व्यवस्था को डग्मगाकर उस अव्यवस्था को परिणामी प्रभावों व उनसे होने वाले प्रतिक्रियाओं का अध्ययन ही प्रायोगिक पद्धति में किया जाता है विभिन्न प्रयोगों द्वारा सामाजिक यथार्थ का अध्ययन किया जाता है।

NOTES

2. लिखित अलोख प्रलेख नृजाति पद्धति उपागम के रूप में यथार्थ को प्रत्यक्षता देखना चाहती है वह सामाजिक यथार्थ को निरन्तर व सतत प्रक्रिया मानकर उसके निर्माण व पुनर्निर्माण पर बल देती है इसलिये इसको दूसरी पद्धति आलेख-प्रलेख को माना है। नृजाति पद्धति शास्त्र की धारणा है कि आलेख-प्रलेखों जैसे व्यक्तिगत पत्र व्यक्तिगत डायरी लेख व किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धी फ़िल्म भी इस दृष्टि से महत्वपूर्ण माने गये हैं।

इस पद्धति में जितनी भी व्यक्ति के सामाजिक जीवन से सम्बन्धित घटनाएँ हैं उनको समय के क्रम में रखकर उन सामाजिक घटनाओं के अर्थ को समझा जाना है जिससे हम परस्पर वस्तु या घटना की संपूर्णता का समय सापेक्ष में अवलोकन करसके तथा यह भी जानकारी प्राप्त कर सके कि अमुक घटना के सम्बन्ध में किन-किन व्यक्तियों के अध्ययन हेतु दूरदर्शन पर किसी भी दृष्टि समुदाय का चित्रण किया जाना।
3. अवलोकन सहभागीता नृजाति पद्धति में उन तरीकों का प्रयोग किये जाने पर बल दिया जाता है जो सामाजिक यथार्थ का प्रत्यक्षतः अवलोकन करने में सक्षम है क्योंकि इस उपागम द्वारा हम किसी सीमित सामाजिक यथार्थ का गहन अध्ययन कर सकते हैं इसमें कुछ विद्वानों का मत है कि छूपकर सुनने कि क्रिया (over hearing) द्वारा व्यक्तियों के वास्तविक व्यवहार को जानकर सत्यता का पता लगाना। क्योंकि अनेक व्यक्ति दबाव में आकर या भयातुर होकर जबरन मुँह खोलने को मजबूर हो जाता है या कर दिया जाता है। मैक्स बेवर की वस्टैडन पद्धति पर अधिक बल दिया जाता है। और अवलोकन सहभागीता के माध्यम से बोध पर अधिक बल दिया जाता है नृजाति पद्धति गुणात्मक महत्त रखती है।

11.10 नृजाति पद्धति का महत्व

समाजशास्त्र नृजाति पद्धति में वास्तव में आलोचनाओं द्वारा तो किसी भी सामाजिक प्रघटनाओं या उपागम में निखार आता है जिस उपागम की जितनी अधिक आलोचनाएँ होती है उस उपागम में उतना ही अधिक परिमार्जन होता है। साथ ही आलोचना इस बात को व्यक्त करती है कि नृजाति पद्धति ने इतने अधिक विद्वानों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया है। इस उपागम की प्रमुख कमियाँ निम्नलिखित हैं-

1. सामान्यीकरण संभव नहीं इस प्रकार के उपागम से अध्ययन व्यष्टि स्तर पर होंगे तथा की क्रियाओं का समष्टि स्तर पर अध्ययन करना कठिन हो जायेगा। इसलिए सामान्यीकरण संभव नहीं हो सकेंगे जो सभी विज्ञान के लक्ष्य होते हैं।
2. उद्देश्यहीनता: लोक-विधि उपागम के आलोचकों ने एक अन्य आलोचना इस आधार पर की है कि लोक विधि विज्ञानियों द्वारा चित्रित समाज के प्रकारके स्वयं सिद्ध मानने वाले सदस्यों का ऐसा प्रतीत होता है कि कोई लक्ष्य अथवा उद्देश्य नहीं है।
3. अवैज्ञानिक : लोक विधि उपागम का आधार दर्शन शास्त्रीय है अतः यह अवैज्ञानिक है। यह उपागम समाजशास्त्र के केवल दार्शनिक या अवैज्ञानिक पक्ष को प्रस्तुत करता है अतः यह एकांगी है।
4. अवधारणाएँ किलष्ट : अनेक विद्वानों ने लोक विधि उपागम की अवधारणाओं की आलोचना करते हुए कहा है कि इसकी उप कल्पनाएँ अर्थ निरूपण की दृष्टि से अत्यन्त मुश्किल है जिनको समझा जाना आसान नहीं है।

NOTES

5. समय व श्रम का अपव्यय : कुछ समाजशास्त्रियों का मत है कि कर्ता के दृष्टिकोण से सामाजिक प्रघटनाओं को अर्थ प्रदान करके सामाजिक यथार्थ का अवलोकन करने के कारण इस उपागम में एक ही घटना को भिन-भिन कर्ता अगर अलग-अलग अर्थ प्रदान करते हैं तो ऐसी सामाजिक घटनाओं के अर्थ निरूपण में समय व श्रम का अपव्यय होता है।

कुछ समाजशास्त्रियों ने इस उपागम को आलोचना की है तो इसकी अचार्यों को भी प्रस्तुत किया है जो निम्नलिखित है -

1. इस उपागम द्वारा अवलोकन तथा सहभागी अवलोकन पद्धति को अपनाकर अध्ययन तथा अनुसंधान किये जाते हैं अतः इस उपागम द्वारा किये गये अध्ययन सत ही ज्ञान के संधारक न होकर गहन अध्ययन व अनुसंधान होते हैं।
2. संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम के जरूरत से अधिक प्रभाव ने सामाजिक यथार्थ को अत्यन्त स्थिर व दृढ़ बना दिया है। नृजाति पद्धति शास्त्री मानते हैं कि सामाजिक यथार्थ कभी भी स्थिर नहीं रहता। बल्कि वह परिवर्तनशील है इस उपागम ने सामाजिक प्रघटना के रहस्यमय पक्ष को उजागर किया है।
3. इस पद्धति ने सामाजिक प्रघटनाओं को निर्वचन प्रारूप द्वारा समझने पर बल दिया है अतः यह व्यञ्जितप्रकक अध्ययन को बढ़ावा देती है।
4. नृजाति पद्धति मौखिक व अमौखिक दोनों प्रकार के व्यवहारों का अध्ययनक रूप से प्रत्युतार देने या न देने के कारणों की व्यवस्था है।
5. यह सांस्कृति मुख्योटी की अपेक्षा करके सामाजिक यथार्थ को समझने के लिए महत्वपूर्ण उपागम है।
6. नृजाति पद्धति भाषा के समाजशास्त्रीय पक्ष के विशेष रूप से अध्ययन पर बल देती है ना कि भाषाविद या व्याकरण शास्त्रीय अर्थ पर।
7. मूलर ने अपनी कृति में बताया है कि नृजाति पद्धति में दिन प्रतिदिन घटनाओं का अध्ययन ऊँहें, समस्या मूलकर मानकर किया जाता है। उनाक कार्य आवकरण को हटाकर सामाजिक यथार्थ का प्रत्यक्ष निरूपण करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि नृजाति पद्धति सैद्धान्तिक दृष्टि से एक नवीन किवास है। इसकी उत्पत्ति वर्तमान समय में हुई है और इस उपागम में समाजशास्त्र के परम्परगात विश्वासों को एक चुनौती दी है। यद्यपि सैद्धान्तिक दृष्टि से नृजाति पद्धति का स्वरूप बड़ा ही ढीला-ढाला है। लेकिन फिर भी इसमें प्राचीन पद्धतियों को नये ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

अध्याय का संक्षिप्त सार

इस अध्याय में आपने यह जाना कि समाजशास्त्र के क्षेत्र में नृजाति पद्धति काविकास हुआ? आपने यह समझ सत्य होगा कि समाजशास्त्र में नृजाति पद्धति में सामाजिक वास्तविकता को जानने की इच्छा व्यक्त कि जा सके सामाजिक यथार्थ को जानने के विभिन्न तरीकों का उल्लेखित किया हैं समाजशास्त्र में एथनो पद्धति में व्यक्तियों के अध्ययन करने की पद्धतियों को सामाजिक प्रघटनाओं के अध्ययन हेतु प्रयोग में लाया जाता है एवं दैनिक की घटनाओं को समझ कर सुलझाया जाता है।

अतः इस उपागम का प्रयोग मनुष्य की दैनिक जीवन की गतिविधियों में किया जाता है। जिसके माध्यम से सामाजिक प्रघटनाओं को समझकर उनी समस्याओं का समाधान किया जा सके।

परीक्षाप्रयोगी प्रश्न

NOTES

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. नृजीय पद्धति से आपका क्या तात्पर्य है? सरंचना प्रकारीत्मक उपागम से यह कैसे भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।
2. नृजीय पद्धति में गौर फिन्क्रल के योगदान को बताइए।
3. नृजीय पद्धति की अवधारणाओं को स्पष्ट कीजिए।
4. नृजीय पद्धति के पहलुओं के अध्ययन पर प्रकाश डालिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नृजीय पद्धति के विकास की पूर्व दशाओं का वर्णन कीजिए।
2. हरसन एवं सूटज के योगदान पर प्रकाश डालिए।
3. नृजाति पद्धति के प्रकारों का उल्लेख कीजिए।

बस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. नृजीय पद्धति के जनक माने जाते हैं-

(अ) गौरफिन्क्रल	(ब) कॉम्प्ट
(स) टॉयनबी	(द) पैरिटो
2. नृजाति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किया गया था-

(अ) सन् 1960 से	(ब) सन् 1955 में
(स) सन् 1945 में	(द) सन् 1940 में
3. नृजाति पद्धति की प्रमुख अवधारणाएँ हैं -

(अ) 6	(ब) 5
(स) 4	(द) 2

उत्तरमाला

1. (अ), 2. (स), 3. (ब)